Vol 4 Issue 7 Jan 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | Jan-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

तथाकथित धर्म निरपेक्ष भारतीय राजनीति का सुशासन व अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव : एक समाजिक मूल्यांकन

नीरज मील[1], रामदेवी[2]
[1]P.hd. in Commerce (उच्च अध्ययन शोधार्थी)
[2]P.hd. Scholar, University of Rajasthan, Jaipur

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन देशहित में वाणिज्य एवं राजनीतिशास्त्र का एक साझा अध्ययन है। यह अध्ययन भारत की वर्तमान तथाकथित धर्म निरपेक्ष राजनीति द्वारा भारतवर्ष के सुशासन एवं सक्षम अर्थव्यवस्था के सपने को किस तरह से कमजोर कर रहा है को समझने का प्रयास है।

यह अध्ययन किसी भी धर्म का पक्ष नहीं ले रहा बल्कि निष्पक्ष मूल्यांकन कर रहा है। वर्तमान समय में जहां एक ओर देश को सुशासन की महत्ती आवश्यकता है ताकि भारत एक सक्षम एवं दक्ष मुल्क के रूप में उभर सके वहीं सब ओर लोगों को धर्म और जाति के आधार पर विभक्त किया जा रहा है। वास्तव में यह न केवल भारत की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है बल्कि देश में कुशासन को बढ़ावा देने वाला भी है। जहां तक आर्थिक स्थिति की चिन्ता है तो कहा जा सकता है कि आर्थिक विषमता की खाई को सभी नागरिकों को समान आधार पर रखे बिना मिटाने की कल्पना मात्र भी बेमानी होगा। सुशासन तभी हो सकता है जब देश में प्रत्येक नागरिक केवल नागरिक ही हो और कुछ भी नहीं। इस अध्ययन में न केवल यह देखा गया है कि राजनीति सुशासन के लिए किस तरह से जिम्मेदार है बल्कि यह भी अध्ययन किया गया है कि वर्तमान धर्मनिरपेक्ष राजनीति किस कद्र धार्मिक होकर भारत को आर्थिक एवं सुशासन में गर्त में ले जा रही। अध्ययन में इससे बचाव एवं उपचार पर भी पूर्णरूप से एकाग्र होने का प्रयास करते हुए उपचार एवं बचाव हेतु सुझाव प्रेषित है। इस अध्ययन को देश के कर्णधार एवं नीतिनिर्धारक किस रूप में लेंगें एवं कितना समझेंगें ये अभी भविष्य के गर्भ में है। आशा ही की जा सकती है कि इस अध्ययन की हर स्तर पर समीक्षा होगी एवं देशहित में ये आम नागरिकों के साथ-साथ तथाकथित नेताओं के मानस पटल पर भी असर होगा और यह अध्ययन देशहित में काम आ सकेगा।

प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्ययन भारत की वर्तमान तथाकथित धर्म निरपेक्ष राजनीति का भारतवर्ष के सुशासन एवं सक्षम अर्थव्यवस्था के सपने को किस तरह से कमजोर कर रहा है वर्तमान समय में जहां एक ओर देश को सुशासन की महत्ती आवश्यकता है ताकि भारत एक सक्षम एवं दक्ष मुल्क के रूप में उभर सके वहीं सब ओर लोगों को धर्म और जाति के आधार पर विभक्त किया जा रहा है। वास्तव में यह न केवल भारत की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है बल्कि देश में कुशासन को बढ़ावा देने वाला भी है। जहां तक आर्थिक स्थिति की चिन्ता है तो कहा जा सकता है कि आर्थिक विषमता की खाई को सभी नागरिकों को समान आधार पर रखे बिना मिटाने की कल्पना मात्र भी बेमानी होगा। सुशासन तभी हो सकता है जब देश में प्रत्येक नागरिक केवल नागरिक ही हो और कुछ भी नहीं।

वर्तमान भारत की सबसे बड़ी त्रासदी एवं असुरक्षा है वर्तमान की बेइमान राजनीति और नेता। अब यह सर्वविदित हो चुका है कि देश व समाज को सबसे अधिक खतरा बाह्य लोगों एवं पड़ोसी देशों से ही नहीं बल्कि इससे कहीं ज्यादा खतरा भीतर बैठकर घात लगाने वाले भीतरघातियों से है। ये भीतरघाती और कोई नहीं सिवाय भारत के तथाकथित राजनेता ही हैं। सत्ता के लोभी, धन के भूखे नेता बहुत खतरनाक हैं। नेताओं का ये चेहरा भारत ने पहले कभी नहीं देखा। ये ताश के पत्तों के उन खिलाड़ियों के समान है, जो केवल पत्ते फैंकते हैं और जनभावनाओं रोकड़ा व वोट में तब्दील करने का खेल खेलते हैं।

डॉ. नीरज मील , श्रीमती रामदेवी , **"***तथाकथित धर्म निरपेक्ष भारतीय राजनीति का सुशासन व अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव : एक समाजिक मूल्यांकन* **"**, Golden Research Thoughts | Volume 4 | Issue 7 | Jan 2015 | Online & Print

क्या हिन्दूत्व एक धर्म है?

इस अध्ययन में हिन्दूत्व पे इस लिए केन्द्रिकृत किया गया है क्योंकि हाल ही में इस विचार में विश्वास रखने वालों को सामप्रदायिक करार दिया जा रहा है। हिन्दू एवं मुसलमानों को नागरिक के रूप में टुकडे-टुकड़े विभाजित कर रखा है। हिन्दूत्व को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर कोसने वाले नेता जो खेल हिन्दूत्व को बदनाम करने का खेल खेल रहे है अब ये बात किसी से भी छूपी नहीं है। लेकिन ये हमारा दुर्भाग्य है कि जो हिन्दूत्व सदियों से इस देश की रक्षा करते आया है एवं मानव जाति को कल्याण की ओर ले जाने का रास्ता दिखाया है वही धर्म तो अब साम्प्रदायिक हो गया है और धर्म निरपेक्षता के नाम पर राजनीति खेल रहे नेता भी अब साम्प्रदायिक शक्तियों के हाथों की कठपुतली बन खेलते नज़र आ रहे हैं। स्पष्ट है कि हिन्दूत्व एक धर्म नहीं बल्कि मानव जीवन को जीने का तरीका है।

वर्तमान राजनीति में धर्मनिरपेक्षता तथाकथित क्यों?

वर्तमान भारत की दुर्दशा में तथाकथित धर्मनिरपेक्षता सबसे बड़ा दोष है। भारत में प्रत्येक सार्वजनिक संगठन(राजनीतिक एवं गैर राजनीतिक दोनों) द्वारा धर्म निरपेक्ष होने का दावा किया जाता रहा है लेकिन हकीकत में ये सब केवल भारत की पुरातन सांस्कृति धरोहर 'हिन्दूत्व' के विरोध के अलावा और कुछ भी नहीं है। वर्तमान परिपेक्ष में आलम ये है कि जो कोई भी हिन्दूत्व या हिन्दूधर्म की बात भी कर लेता है वो साम्प्रदायिक माना जाने लगा है।

प्रश्न यही है कि अगर वर्तमान राजनीति धर्म निरपेक्ष है, भारत में बनने वाली सरकार और नीतियाँ धर्मनिरपेक्ष है तो क्यों जनगणना जैसी राष्ट्रीय क्रियाएं धर्माधारित होती है? क्यों एक देश में नागरिकों के लिए अलग-अलग नीतियाँ बनती है?

राजनीति एवं विकास में सहसम्बन्ध

राजनीति एवं विकास में धनात्मक सम्बन्ध है। जिस देश की राजनीति स्वच्छ एवं निष्पक्ष होती है वहां देशहित सर्वापरि रहता है। दुर्भाग्य से भारत में ऐसा कभी नहीं रहा। यहां राजनीति हमें अंग्रेजों द्वारा दी गयी शिक्षा पर आधारित है। यहां राजनीति से आशय उस नीति से है जिसकी वजह से सत्ता हासिल हो सके न कि उस नीति से जिस से राज किया जाता है। दोनों विषय देखने में भले ही समान से प्रतीत होते है लेकिन वास्तव में दोनों में गहरा एवं वृहत् भिन्नता है। वर्तमान राजनीति में धर्मनिरपेक्षता अहम है जबकि हकीकत तो यह है कि भारत वर्ष की राजनीति में धर्म का जिक्र होना ही नहीं चाहिए।

वर्तमान में भारत धार्मिक राजनीति की वजह से कुशासन एवं कमजोर होती आर्थिक स्थिति जैसी दोहरी समस्याओं से झूझ रहा है। जहां धार्मिक राजनीति की वजह से अर्थव्यवस्था पिचक रही है वहीं सुशासन का सपना भी दूर होता ही दिखाई दे रहा है। अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में सत्य रूप में तथ्य यही है कि धार्मिक राजनीति के चलते कुछ लोगों को आजादी के बाद से कुछ अतिरिक्त सुविधाएं एवं सहुलियते देने का ढ़ोग कर लोगों को बांटने का काम वृहत स्तर पर किया गया। धार्मिक राजनीति से ही पूरे देश में तनाव का माहौल उपजा है, नागरिक धर्म के नाम पर बट गया है। निवेशक कभी भी ऐसे किसी भी बाजार में पूँजी नहीं लगाना चाहेगा जहां प्रतिदिन धार्मिक राजनीति से टकराव की स्थिति पैदा होती है। क्या लव जेहाद और घर वापसी कार्यक्रमों को राजनीति से जोड़ना 'बाटों और राज करों' की नीति का हिस्सा नहीं है? लेकिन इससे भी बड़ा प्रश्न तो ये है कि 'क्या ये पक्ष एवं विपक्ष दोनों ही तरफ से धार्मिक राजनीति नहीं है?

तथाकथित धर्मनिरपेक्षता व भारत में साक्षरता

सामाजिक मूल्यहीनता का मूल राजनीति का मूल्यहीन और धार्मिक हो जाना है क्योंकि अर्थव्यवस्था और समाज राजनीतिक द्वारा प्रभावित ही नहीं बल्कि राजनीति प्रधान भी हैं। जहां हम देश के आंकड़ों पर गौर करे-

धर्म का नाम	कुल साक्षरता	पुरूष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर
हिन्दू	65.1	76.2	53.2
मुस्लिम	59.1	67.6	50.1
इसाई	80.3	84.4	76.2
सिख	69.4	75.2	63.1
बौद्ध	72ण्7	83.1	61.7
जैन	94.1	97.4	90.6
अन्य असूचित	47.0	60.8	33.2
कुल	64.8	75.3	53.7

स्रोत- २००१ की जनगणनानुसार

आंकड़े बताते है कि भारत की राजनीतिक नीतियों में तथाकथित एवं पक्षपातपूर्ण धर्मनिरपेक्षता के चलते बजट का एक बड़ा हिस्सा अल्पसंख्यकों के लिए खर्च करने के बावजूद इन अल्पसंख्यकों में साक्षरता की दर(न कि शिक्षा की दर) १०० प्रतिशत या उसके आसपास भी नहीं जा पाई। हां जैन समुदाय जो कि हिन्दू समुदाय का ही हिस्सा है जरूर १०० प्रतिशतता के लगभग मानी जा सकती है जो कि शुरू से ही साक्षरता के मामले में सक्षम रही है।

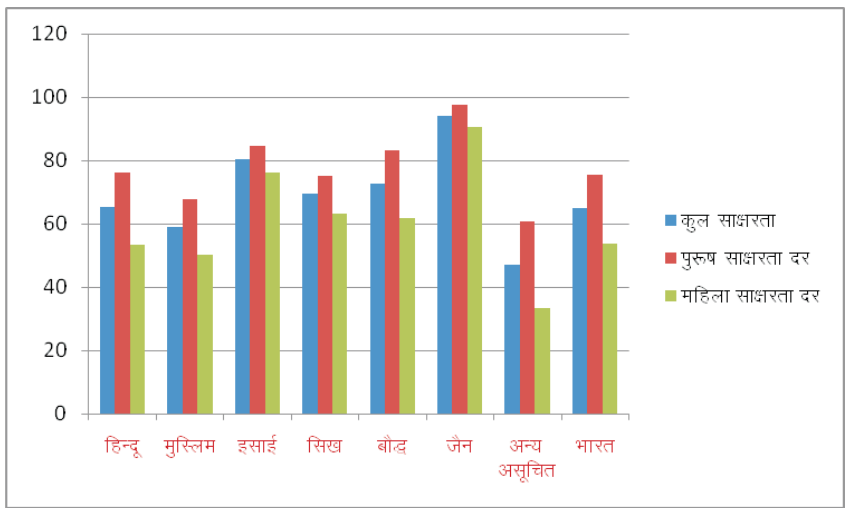

स्रोत- २००१ की जनगणनानुसार

जैसा कि विदित है कि धर्मनिरपेक्षता वर्तमान में वही मानी जा रही है जो केवल मुस्लिम समुदाय की तरफदारी करती है। साक्षरता के नजरिये यह समुदाय भी काफी पिछड़ा हुआ ही कहा जायेगा क्योंकि यही वह समुदाय है जिसको उपर उठाने के लिए भारत में राजनीति होती है। भारत में मुसलमानों एवं असूचित के अलावा बाकी सभी प्रमुख धर्मों की कुल साक्षरता का प्रतिशत राष्ट्रीय प्रतिशत से अधिक है। मुस्लिम व अन्य असूचित धर्मों का महिला प्रतिशत तो और भी अधिक दयनीय स्थिति में है। यह प्रतिशत तो अपने वर्ग की कुल साक्षरता प्रतिशत से ही कम है। हालांकि महिला साक्षरता प्रतिशत(हिन्दुओं) में कुल राष्ट्रीय महिला साक्षरता प्रतिशत से थोड़ा कम ही है। महिला-पुरूष साक्षरता प्रतिशत की खाई सबसे कम जैन धर्म में ही है। यहां महिलाओं का प्रतिशत ९०.६ है जो कि अन्य कई प्रमुख धर्मों की कुल एवं कुल पुरूष साक्षरता से भी ज्यादा ही है।

जनसंख्यात्मक प्रवृति और राजनीतिक चिंतन

यह भारत के लिए अफसोस ही होगा कि भारत में केवल समानता और निष्पक्षता के साथ न्याय की बात की जाती है। परिवार नियोजन और जनसंख्या वृद्धि के तमाम प्रयासों को धत्ता बताना आज अल्पसंख्यक (मुस्लिम समुदाय) का अहम् लक्ष्य बन चुका है। निम्न आंकड़ों की प्रवृति इसी ओर इशारा करती दिखाई दे रही है-

भारत के मुख्य धार्मिक समुदायों की जनसंख्या प्रवृत्ति

धार्मिक समुदाय	समुदाय : 1951	समुदाय : 1961	समुदाय : 1971	समुदाय : 1981	समुदाय : 1991	समुदाय : 2001	समुदाय : 2011
हिन्दू	85%	83.45%	82.73%	82.30%	81.53%	80.46%	79.6%
मुस्लिम	9.9%	10.69%	11.21%	11.75%	12.61%	13.43%	14.2%
ईसाई	2%	2.44%	2.60%	2.44%	2.32%	2.34%	2.34%
सिख	1.79%	1.79%	1.89%	1.92%	1.94%	1.87%	1.87%
बौद्ध	0.74%	0.74%	0.70%	0.70%	0.77%	0.77%	0.77%
जैन	0.46%	0.46%	0.48%	0.47%	0.40%	0.41%	0.41%
पारसी	0.13%	0.09%	0.09%	0.09%	0.08%	0.06%	0.06%
अन्य	0.43%	0.43%	0.41%	0.42%	0.44%	0.72%	0.72%

स्रोत- २००१ की जनगणनानुसार

आजादी के बाद जिस हिन्दू समुदाय को बहुसंख्यक कहा जाता रहा है। वह जनसंख्या को नियन्त्रित करने में हरसम्भव प्रयास कर रहा है और १९५१ से २०११ में आते आते कुल जनसंख्या के ८५ फीसदी से केवल ७९ फीसदी तक सिमट कर रह गया है। स्पष्टतः यही कहा जायेगा कि हिन्दू समुदाय का जनसंख्या भार कम हुआ हैं।

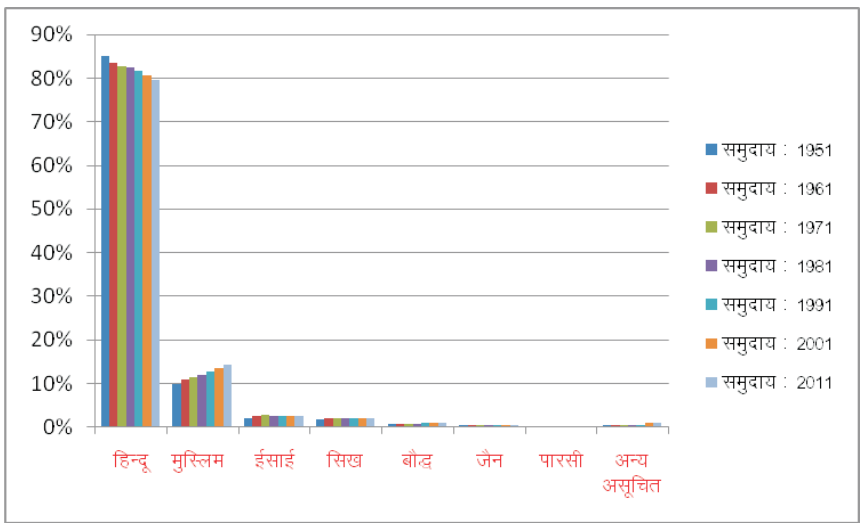

स्रोत- २००१ की जनगणनानुसार

लेकिन तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की वजह से अल्पसंख्यक समुदायों में मुस्लिम समुदाय ने कुल जनसंख्या में ९.९ फीसदी से ४.३ फीसदी की अप्रत्याशित गैर जरूरी वृद्धि के साथ १४.२फीसदी भार पर आ गया है। हालांकि आर्थिक, स्वास्थ्य एवं सामाजिक स्तर पर यह समुदाय अभी भी चिन्ताजनक स्थिति से नहीं उबर पाया है जबकि इस समुदाय के उत्थान हेतु भारत में खर्चा सर्वाधिक हुआ है।

तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति देश के विकास में बाधा है!

वास्तव में वर्तमान की तथाकथित राजनीति विकास में बाधा डालने का कार्य ही कर रही है। राजनीति की यह धर्मनिरपेक्षता सबसे पहले विकास की नीतियों के निर्धारण को प्रभावित करती है उसके बाद उनके क्रियान्वयन को। उदाहरण के तौर पर परिवार नियोजन। जहां परिवार नियोजन एक राष्ट्रीय कर्तव्य है वहीं यह राष्ट्रीय कर्तव्य की जगह धार्मिकता की भेंट चढ़ चुका है। यहां एक धर्म परिवार नियोजन को स्वतन्त्रता देता है तो दूसरा धर्म इसे नापाक हरकत करार देता है। ऐसे में परिणाम हमारे सामने हैं।

विकास का दूसरा पक्ष है सामुदायिक कार्य भागीदारी, जिसमें महिला एवं पुरूष दोनों को सम्मिलित किया जाता है। और रोजगार और श्रम सम्बन्धी नीतियों का निर्धारण व निर्माण होता है। भारतवर्ष में इस कार्य में भी राजनीती की धर्म निरपेक्षता आड़े आ जाती है। इसके परिणाम को हम निम्नानुसार प्रदर्शित कर सकते है-

भारत में कार्य भागीदारी दर

धर्म का नाम	देश में कार्य भागीदारी दर		
	कुल	पुरूषों की भागीदारी	महिलाओं की भागीदारी
हिन्दू	40.40	52.40	27.50
मुस्लिम	31.30	47.50	14.10
इसाई	39.70	50.70	28.70
सिख	37.70	53.30	20.20
बौद्ध	40.60	49.20	31.70
जैन	32.90	55.20	09.20
अन्य असूचित	48.40	52.50	44.20
भारत	**39.10**	**51.70**	**25.60**

जैसी स्थिति भारत में साक्षरता की है ठीक वैसी ही स्थिति कार्य भागीदारी में है। आंकड़ों का विश्लेषण करे तो ज्ञात होता है कि भारत में मुसलमानों एवं जैन समुदाय के अलावा बाकी सभी प्रमुख धर्मों की कुल कार्य भागीदारी देश की कुल कार्य भागीदारी का प्रतिशत राष्ट्रीय प्रतिशत से भी कम है। महिला एवं पुरूष वर्गवार में तो ये स्थिति ओर भी नाजुक है। जहां महिला वर्ग में मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन सम्प्रदाय वर्ग की कार्यभागीदारी अपने वर्ग की राष्ट्रीय कुल भागीदारी से भी कम है। वहीं पुरूष वर्ग में मुस्लिम व बौद्ध, सम्प्रदाय वर्ग की कार्यभागीदारी अपने वर्ग की राष्ट्रीय कुल भागीदारी से कम है।

महिला-पुरूष कार्य भागीदारी के प्रतिशत की खाई सबसे अधिक क्रमशः जैन धर्म व मुस्लिम सम्प्रदाय में ही है। यहां महिलाओं का प्रतिशत क्रमशः जैन धर्म में ९.२० है जबकि जैन महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत बहुत अधिक है। मुसलमानों में यह १४.१० फीसदी है, जो कि अन्य सभी प्रमुख धर्मों की महिला वर्ग की कुल कार्यभागीदारी प्रतिशत व अपने वर्ग की कार्यभागीदारी प्रतिशत से भी कम है।

सुझाव

हमें शहीद-ए- आजम् भगतसिंह की वो चिन्ता इस अध्ययन को पूरा करने के लिए एवं राजनीति में एक नई सोच एवं विचार लाने की ओर प्रेरित किया है।

शहीद-ए- आजम् भगतसिंह ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक आर्मी को हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन बनाते वक्त १९२८ में चिन्ता जाहिर की थी कि ''हमें डर है कि कांग्रेस के रास्ते चलते हुए कहीं देश का पुनर्गठन धर्म और जाति के आधार पर न हो जाये। नही तो विकास की बात तो दूर रहेगी और देश की नई नस्लों की कमर तो इसे दूर करने में ही टूट जायेगी।'' वास्तव में आजादी के बाद हुआ भी यही। वर्तमान की इस धर्म निरपेक्षता देश को जितना नुकसान पहुचाया है उतना धार्मिकता ने नही।

राजनीति की तथाकथित धर्म निरपेक्षता, भारत के वर्तमान विकास व राजनीति के शृद्धिकरण में सबसे बड़ी बाधा है जिसे दूर किया जाना अनिवार्य ही नहीं अपितु निहायत ही जरूरी है। इस अध्ययन से यह साफ हो चुका है कि देश में तथाकथित धर्मनिरपेक्षता राजनीतिक पार्टियों के लिए फायदेमन्द हो सकती है लेकिन यह देश की राजनीति के लिहाज से बिल्कुल भी नहीं अर्थात् देशहित में न तो ऐसी राजनीतिक धर्मनिरपेक्षता को जायज ठहराया जा सकता है और न ही ऐसी धर्मनिरपेक्षता को संवैधानिक कहा जा सकता है। अतः मूलतः हमें निम्नांकित परिवर्तन करने ही होंगे ताकि देश को विकास और नागरिकों को समानता हासिल हो सके-

1.तथाकथित धर्मनिरपेक्षता का खात्मा– देश के प्रबुद्धजनों को आगे आना होगा और इस दशा को नई दिशा प्रदान करना होगा। अब समय आ गया है कि देश के लिए देशहित की राजनीति पर शोध एवं अध्ययन हो ताकि देशहित में देश की स्थिति एवं परिस्थितियों के अनुसार एक प्रबल विचार राष्ट्र पटल पर आ सके और वर्तमान की तथाकथित राजनीति का खात्मा हो सके। एक सच्चा सुशासन आ सके। सुशासन केवल बाते करने या सुशासन की कामना करने से सम्भव नहीं होता। देश

2.नीतियों का निर्धारण एवं निर्माण नागरिक एवं देश आधारित हो– देश में वर्तमान समय में बनने वाली नीतियाँ न तो जायज है और न ही सक्षम। ये नीतियाँ कोरी कल्पना पर आधारित होती है वास्तविकता से बिल्कुल परे। मंत्रालय के आलीशान कमरों बैठकर देश की दुर्दशा के बारें में नहीं एहसास नहीं हो सकता क्योंकि दर्द का ईल्म तभी हो सकता है जब खुद की अंगुली घायल होती है। एक देश में रहने वाले नागरिक संवैधानिक दृष्टि में अलग-अलग नहीं हो सकते और न ही उनके लिए अलग-अलग नियम हो सकते। अतः आवश्यकता इस बात की है कि जो भी नीतियाँ बने वो देश और देश की परिस्थितियों के अनुसार बने और हकीकत से वाकिफ़ भी हो। जनता की शत-प्रतिशत भागीदारी के बिना न तो कोई नीति सफल होती है और न ही कोई विकास। नीतियाँ ऐसी हो जिनकी नज़र में हर व्यक्ति देश का नागरिक हो नकि मुस्लिम, ईसाई या अन्य क्योंकि धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला हो सकता है सार्वजनिक नहीं।

निष्कर्ष

स्पष्ट रहे कि धर्म-निरपेक्षता नाम का अस्तित्व तभी सम्भव हो सकता जब किसी भी धर्म की सार्वजनिक बात ही न की जाये। जो कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में असम्भव सा है। हकीकत तो ये है कि भारत में धर्म निरपेक्षता का लबाधा ओढ़कर राष्ट्र और राष्ट्रीय मूल्यों की रक्षा नहीं की जा सकती । उम्मीद की जाती है कि देश की जनता जागती रहे और इन छद्म भेड़िये की प्रकृति के नेताओ से सतर्क रहे। राष्ट्र के लिए उसकी संस्कृति एवं संस्कार ही सर्वोपरि होते है। हमें कीमत और मूल्यों में विभेद करना आना चाहिए। विकास का रथ तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के कच्चे रास्तों में नहीं चल सकता उसे तो राष्ट्रीय मूल्यों वाली पक्की सड़क ही चाहिए होती है जो वास्तव में बिना निष्पक्षता सम्भव नहीं है।

स्रोत–REFERENCES:

1. Ahmad, I. (1975). "Economic and Social Changes", in Muslims in India, ed. Zafar Imam, New Delhi:Orient Longman. pp: 231-255.
2.Ahmad, I. (1981). "Muslim Educational Backwardness: An Inferential Analysis", Economic and Political Weekly, Vol.16, No. 36, Sep.5, pp. 1457-1465.
3Ahmad, I. (2007). "Exploring the Status of Muslims in the Economy", Economic and Political Weekly, vol. 42, No. 37, September 15, pp. 3703-3704.
4.Alam, Mohd Sanjeer. (2009) "Is Relative Size of Minority Kmujl Linked to Underdevelopment." Economic and Political Weekly, Vol. 44, No 48
5.Alam, M. S and Saraswati Raju. (2007). Contextualising Inter-, Intra-religious and Gendered Literacy and Educational Disparities in Rural Bihar. Economic and Political Weekly, Vol. 42, No. 8, pp. 1613-1622.
6.Aleaz, B. (2005). Madrasa Education, State and Community Consciousness: Muslims in West Bengal, Economic and Political Weekly, Vol. 40. No.6, pp. 555-565.
7. Ansari, I. A. (2006). Political Representation of Muslims in India: 1952-2004, New Delhi: Manak Publications Pvt. Ltd, pp. (27, 340-341, 378-379).
8.Beg, T. (1989). "Economic Development of Indian Muslims: Some Strategic Options", in The Muslim Situation in India, ed. I. A. Ansari, New Delhi: Sterling Publishers Private Limited, pp. 116-131.
9.Besant, R. (2007). "Social, Economic and Educational Conditions of Indian Muslims, (Symposium on Sachar Committee Report)", Economic and Political Weekly, Vol. 42 No.10 March 10, pp. 828-832.
10.Besant, R. (2011). Perspective on Muslims in India: Sachar Committee Report and its Aftermath, whole path required, http://casi.ssc.upenn.edu/iit/basant, Accessed on 15, March, 2011.
11.Census of India, 2011. Provisional Papers Totals Paper 1, http://censusindia.gov.in/2011-rovresults/census2011_paper1_states.html, Accessed on 27.09.2011
12.Basant, Rakesh & Abusaleh, Shariff (2010). The State of Muslims in India. In Oxford Handbook of Muslims in India: Empirical and Policy Perspective, ed. Rakesh Basant & Abusaleh Shariff. New Delhi: OUP, p. 10.
13.Dasgupta, A. (2009). "On the Margins: Muslims in West Bengal", Economic and Political Weekly, Vol. 46, No 16, April 18, pp. 91-96.
14.Deolalikar, A. B. (2010). The Performance of Muslims on Social Indicators: A Comparative Perspective.In Oxford Handbook of Muslims in India: Empirical and Policy Perspective, ed. R. Basant. & A. Shariff. New Delhi: Oxford University Press, 2010.
15.Eaton, M Richard. (1994). The Rise of Islam and the Bengal Frontier, 1204-1760. Delhi: Oxford University Press.
16.GOI, (2006.). Social, Economic and Educational Status of Muslim Community of India – A Report.New Delhi: Prime Minister's High Level committee, Cabinet Secretariat, Government of India.(Chairperson Justice Rajinder Sacher), p.50-51
17.Hasan, Zoya and Ritu Menon, (2004). Unequal Citizens: A Study of Muslim Women in India, New Delhi: Oxford University Press.p.2
18.Hasan, Zoya and Ritu Menon (2005). Educating Muslim Girls- A Comparison of Five Indian Cities, New Delhi: Women Unlimited.
19.Hasan, Zoya. (2009). Poilitics of Inclusion: Caste, Minorities, and Affirmative Acion, New Delhi: Oxford University Press, 2009, p.127.
20.Hunter, W W (1969). The Indian Musalmans, London, Delhi: Indological Book House, p. 158.
21.Hussain, Z. (2005): "Analysing Demand for Primary Education: Muslim Slum Dwellers of Kolkata."Economic and Political Weekly, Vol. 40, No. 2, pp 137-47.

22.Jawaid, M. A et al ed, (2007). Minorities of India- Problems and Prospects. New Delhi: Indian Council of Social Science Research in association with Manak Publications Pvt. Ltd, p.33 and 36.
23.Khalidi, O. (1996). Indian Muslims since Independence, New Delhi: Vikash Publishing House Pvt. Ltd,1995, p. 108 and 67.
24.Khurhid, F. (2008). "A Sociological Study of Implications of Government Action and NGOs Initiative on Education of Muslim Women in Kashmir Valley", unpublished M.Phil. Dissertation, Department of Sociology and Social Work, Aligarh Muslim University, Aligarh, November.
25.Thesis of NEERAJ MEEL, COMMERCE "राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के सामाजिक अंकेक्षण का मूल्यांकन राजस्थान के सन्दर्भ में" UNIVERSITY OF RAJASTHAN JAIPUR, YEAR 2012 September

Other References:

1-*निबन्ध मंजूषा– गूगल बुक*
2-http://en.wikipedia.org/wiki/Demographics_of_India
3-http://censusindia.gov.in/2011-prov esults/data_files/india/pov_popu_total_presentation_2011.pdf

नीरज मील ,
P.hd. in Commerce (उच्च अध्ययन शोधार्थी)

रामदेवी
(P.hd. Scholar, University of Rajasthan, Jaipur)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org